Class — T.D.C. Part III

Paper — V (धर्मदर्शन)
(Philosophy of Religion)

Topic — आदिम धर्म के विविध रूप
(Forms of Primitive Religion)

(1) जीववाद (Animism)
(2) प्राणवाद (Spiritism)
(3) फीटिशवाद (Fetishism)
(4) मानावाद (Manaism)
(5) टोटमवाद (Totemism)

डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

प्रारम्भिक (आदिम) धर्म

प्रारम्भिक या आदिम धर्म प्राचीन काल के लोगों की धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। यह केवल प्राचीन काल का ही सूचक नहीं है, अपितु वर्तमान काल में भी यदि धर्म अत्यन्त पिछड़ी अवस्था में हो, तो यह प्रारम्भिक या आदिम धर्म ही है। आदिम धर्म वस्तुतः असभ्य लोगों की धार्मिक अवस्था है जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान की कमी तथा संकीर्ण मानवीय अनुभूति रहती है। आदिम धर्म यह धर्म का आदि रूप है, किन्तु शुद्ध रूप नहीं। आदिम धर्म में जादू, विज्ञान एवं कला आदि इस प्रकार घुले-मिले रहते हैं कि इन्हें पृथक् कर पाना कठिन है।

प्रारम्भिक धर्म के अनेक रूप हैं। इन विविध रूपों की संख्या निर्धारित करना कठिन है। इनमें मुख्य हैं —

① जीववाद (Animism)
② प्राणवाद (Spiritism)

③ फीटिशवाद (Fetishism)
④ मानावाद (Manaism)
⑤ टोटमवाद (Totemism)

① जीववाद (Animism)

प्रारम्भिक या आदिम धर्म के अनेक रूपों में एक जीववाद है ~~जिसके~~ जिसकी विस्तृत व्याख्या टाइलर (Tylor) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " Primitive Culture " में की है। उन्होंने बतलाया है कि जीववाद आदिम धर्म के विविध रूपों का जन्मदाता है। जीववाद के अनुसार प्रकृति की समस्त वस्तुओं में जीवन या आत्मा है। 'Anima' शब्द का अर्थ है — जीवन का श्वास या आत्मा। विश्व में पायी जाने वाली प्रत्येक वस्तु मानव के समान चेतन या आत्मयुक्त है। नदी, पहाड़, झरना, पशु, पक्षी आदि सभी में एकसमान जीव का वास है। ये जीव ही सभी प्रकार की घटनाओं एवं गतियों के लिए उत्तरदायी होते हैं। टायलर ने कहा है कि जीव एकप्रकार की छाया है।

धर्म की जीववादी अवस्था में उन जीवों को पूजा के योग्य माना गया जो जीवन की आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं, जीवन के लिए उपयोगी हैं या भय उत्पन्न करते हैं। जैसे — झरने का पानी, मीठा फल, वायु आदि सभी उपयोगिता के कारण पूजनीय हैं। इसीप्रकार हिंसकजीव (बाघ, सर्प आदि) भयवश पूजा की भावना का संचार करते हैं। विश्व की समस्त वस्तुएँ उत्सुकता एवं भय की भावनाएँ उत्पन्न करती हैं। जीववाद को धर्म की प्रारम्भिक अवस्था बतलाते हुए टायलर ने "Primitive Culture" में लिखा है —

Animism is "the groundwork of the Philosophy of Religion from that of savage, up to that of Civilised man" (जीववाद आदिम से सभ्य मनुष्य तक के धर्म-दर्शन का आधार है।)

जीववाद में आत्मा का विचार पूर्ण रूप में दिखलायी पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि इस अवस्था में धार्मिकता का परिलय मिलता है। इसलिए धर्म के इतिहास में जीववादी अवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

कुछ विचारक जीववाद को धार्मिक अवस्था के रूप में स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार जीववादी अवस्था में धार्मिक भावना का पूर्ण अभाव है तथा परा शक्ति का विचार भी नहीं मिलता है। इस जीववादी अवस्था में केवल प्राकृतिक वस्तुओं पर अपनी इच्छा एवं गुणों को आरोपित किया जाता है। प्रो० एटकिन्सन ली (Prof. Atkinson Lee) ने कहा है कि यह धर्म न होकर प्रारम्भिक जगत् विचार है जो वस्तुओं की व्याख्या करता है। इसीप्रकार डॉ० मरेट (Dr. Marett) ने जीववाद को धर्म का आदिम रूप ~~क~~ स्वीकार नहीं करते हुए इसे केवल प्रारम्भिक दर्शन कहा है जो मानव एवं प्रकृति की बौद्धिक व्याख्या करता है।

कुछ विचारकों ने मानावाद (Manaism) को जीववाद से पूर्व की धार्मिक अवस्था कहा है। इनमें जेम्स, डॉ० मरेट, कोडरिंगटन आदि विचारक प्रमुख हैं। इनके अनुसार 'मन' जैसे निर्जीव एवं व्यक्तित्वरहित पदार्थ को पूजा का विषय ~~का विषय~~ माना गया है। वस्तुतः जीववाद में आत्म-विचार जटिल रूप में पाये जाते हैं, इसलिए यह धर्म की प्रारम्भिक अवस्था नहीं स्वीकार की जा सकती है। आत्म-विचार एक विकसित विचार है जिसकी व्याख्या करने में आदिम मानव सक्षम नहीं था।

इससे पता चलता है कि जीववाद धर्म की अग्रिम (Advanced) अवस्था है। इसमें जीव या आत्मा के विचारों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी है। किन्तु इस अवस्था में धार्मिक समर्पण की भावना का अभाव है तथा पराशक्ति के विचार भी नहीं पाये जाते। इसलिए जीववाद धर्म नहीं, अपितु सभी प्रारम्भिक धर्मों का आधार है।

——X——X——

(2) प्राणवाद (Spiritism)

प्राणवाद प्रारम्भिक धर्म की अपेक्षाकृत विकसित अवस्था है। जीववाद की अवस्था अपने विकास-क्रम में प्राणवाद के रूप में परिणत हो जाती है। प्राणवाद के अनुसार सम्पूर्ण विश्व जीव या आत्मा से युक्त है। इनकी संख्या अनन्त है जो अदृश्य एवं निराकार होते हैं। इनकी अभिव्यक्ति वस्तुओं के माध्यम से होती है। जल, अग्नि, पहाड़, वृक्ष आदि सहयोगी वस्तुओं में इनका निवास है। इसके अतिरिक्त कष्टप्रद वस्तुओं में भी ये पाये जाते हैं। जैसे – हैजा, चेचक, महामारी, बाढ़ लाने वाली नदी आदि में भी इस शक्ति का निवास है। इसप्रकार विभिन्न जीवों में कुछ सहायक तथा कुछ कष्टदायक होते हैं। उदाहरण के लिए, रोग उत्पन्न होने का कारण दुष्ट जीव हैं, जबकि रोग से निवृत्ति का कारण सहायक जीव हैं। इसलिए जनजातियों में दुष्ट जीव के कुप्रभाव से बचने के लिए भेंट, पूजा या बलिदान का प्रचलन है।

प्राणवाद की अवस्था में जीववाद में पाये जाने वाले आत्म-विचार अधिक विकसित रूप में हैं। इसमें आत्मा की सत्ता को स्वतन्त्र माना गया है। प्राणवाद के अनुसार आत्मा एवं शरीर के बीच विच्छेद्य सम्बन्ध है, किन्तु जीववादी अवस्था में आत्मा एवं शरीर के बीच अविच्छेद्य सम्बन्ध माना गया है। प्राणवाद में यह माना जाता है कि एक ही आत्मा विभिन्न शरीरों में बारी-बारी से तथा विभिन्न आत्माएँ एक ही शरीर में बारी-बारी से प्रवेश कर सकती हैं। आत्मा के इस विकसित विचार के सन्दर्भ में प्रो० गैलवे (Prof. Galloway) ने कहा है — "Spiritism marks an advance on mere Animism, and implies a development of the idea of soul."

प्राणवाद में स्वप्न की अनुभूति, प्रतिबि

ने दर्शन आदि के आधार पर यह माना गया कि शरीर से भिन्न
आत्मा की सत्ता है। यह शरीर के नहीं रहने पर भी स्वतन्त्र
रूप में विचरण कर सकती है। जैसे — संध्या-काल में मानव-छाया
का लुप्त हो जाना, स्वप्न में आत्मा का विचरण करना तथा
जाग्रत अवस्था में उसका पुनः शरीर में प्रवेश कर जाना। इस
अवस्था में ऐसा विश्वास देखा गया है कि आत्मा वस्तुओं पर निर्भर
है तथा शरीर में उत्पन्न पीड़ा की अनुभूति आत्मा को होती है।
आत्मा की अमरता से सम्बन्धित विचार इस अवस्था में पाये जाते हैं।
इसकी अभिव्यक्ति जनजातियों के रीति-रिवाज से होती है।
विभिन्न जनजातियों में दो बार संस्कार की प्रथा आत्मा की
अमरता के विचार को संपुष्ट करता है। 'हो' एवं 'मुण्डा' जनजातियों
में दूसरा संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। 'हो' जनजाति
में दूसरे संस्कार को ‘जंगटोपा’ कहा जाता है।

पूर्वज-पूजा (Ancestor Worship) प्राणवाद की
विशेषताओं में मुख्य है। स्वप्न में पूर्वजों को देखकर आदिम
जाति में आत्मा की अमरता के विचार विकसित हुए तथा इसके
द्वारा मृतक व्यक्ति की सत्ता प्रमाणित की गयी। आदिम लोगों
में पूर्वजों के प्रति आदर एवं भय — दोनों प्रकार की भावनाएँ
विकसित हुईं। भारत के संथाल एवं औरांव में पितर-
पूजा का प्रचलन है। संथालों में कुल देवता एवं ग्राम देवता की
पूजा प्रचलित है। मिर्जापुर के कोरवा लोगों में फसल, पशु
एवं वर्षा की पृथक-पृथक अधिष्ठात्री देवियाँ हैं। देव एवं देवी
को प्रसन्न करने के लिए पूजन एवं बलि की प्रथा प्रचलित है।

प्राणवाद में आत्मा की अभिव्यक्ति भौतिक
वस्तुओं के द्वारा सम्भव मानी गयी। ये विचारधाराएँ पुनर्जन्म
सम्बन्धी विश्वास को तथा व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर-विचार को
विकसित करने में सक्षम हुईं। प्राणवाद की अवस्था में मानव से
सीधे जुड़ी हुई अन्य आत्माओं की भी सत्ता स्वीकार की
गयी। ये आत्माएँ भौतिक संसार की विविध घटनाओं को
नियन्त्रित करती हैं जिनके सम्पर्क में मानव आनन्द एवं कष्ट

दोनों का अनुभव करता है। जनजातियों में ऐसा भी विश्वास था कि अमर आत्माएँ पुनः शरीर धारण करेंगी। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे — आसाम के होंग नागा, बंगाल के कमी एवं अहीर, महाराष्ट्र के कुणबी, कमार एवं गोंड लोग व्यक्ति के मर जाने पर उसको कीड़े का रूप धारण करना मानते हैं। आत्मा की अभिव्यक्ति के इन्हीं विचारों के आधार पर ईश्वर में व्यक्तित्व की कल्पना की गयी। इन विचारों से ईश्वरवाद का विकास हुआ।

प्राणवाद धर्म की एक सार्वभौम (Universal) अवस्था है। इसका उल्लेख विश्व के सभी देशों के धर्म के इतिहास में मिलता है। वर्तमान में आदिम धर्म का यह रूप दक्षिण अफ्रिका, आस्ट्रेलिया, फ्यूजियन्स आदि स्थानों पर अधिक प्रचलित है।

इसप्रकार धर्म के इतिहास में प्राणवाद की अवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी अवस्था में सर्वप्रथम आत्मा एवं शरीर को पृथक माना गया। आत्मा की अमरता एवं पुनर्जन्म सम्बन्धी विचार तथा पूर्वज-आराधना के स्वरूप भी इसी अवस्था में ~~प्रकट~~ प्रारम्भिक रूप से दिखलायी पड़ते हैं। अध्यात्मवादी विचारों का विकास भी इसी अवस्था के द्वारा हुआ जिसमें आत्मा को शरीर की अपेक्षा अधिक महत्व-पूर्ण माना गया। ईश्वर में व्यक्तित्व की कल्पना के द्वारा ईश्वरवादी विचारों को एक ठोस आधार प्राप्त हुआ। इसप्रकार प्राणवाद पूर्णरूप से एक धार्मिक अवस्था है जिसमें प्रायः सभी प्रकार की धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप में होती है।

—— X —— X ——

फीटिशवाद (Fetishism)

फीटिशवाद धार्मिक विश्वास की एक अवस्था है जिसमें व्यक्ति आत्मा को किसी वस्तु से बाँधकर उस पर अपना नियन्त्रण बनाये रखना चाहता है तथा उससे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है। आत्मा से युक्त वह वस्तु फीटिश (Fetish) कहलाता है। फीटिश प्रायः किसी मृतक व्यक्ति के शरीर का कोई अंश या कोई अद्भुत पत्थर होता है।

Fetish शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन 'Factitus' शब्द से हुई है जिसका अर्थ कृत्रिम (Artificial) होता है। इसका विकास 'Feitico' से हुआ है, जिसका अर्थ है— आकर्षण (Charm)। फीटिश वास्तव में जादुई चमत्कार है जिसका विकास आत्मा के निवास से हो जाता है। इसकी रहस्यमयी शक्तियों के कारण फीटिश को आराधना का विषय माना जाता है। सर्वप्रथम 15वीं शताब्दी में पुर्तगाल के नाविकों ने फीटिश को आराधना का विषय माना। पश्चिमी अफ्रीका के निग्रो लोगों में यह अत्यन्त प्रचलित है।

फीटिश एवं आत्मा के बीच वास्तव में
किसी प्रकार का आन्तरिक सम्बन्ध नहीं होता है। आत्मा की
सत्ता स्वतन्त्र होने के कारण तथा इनके बीच आन्तरिक सम्बन्ध
के अभाव से आत्मा कभी भी फीटिश का परित्याग कर
सकती है। इससे फीटिश की जादुई शक्ति समाप्त हो जाती
है। इसलिए व्यक्ति फीटिश का प्रयोग तभी तक करता है,
जब तक वह उपयोगी है। उससे मिलने वाला लाभ समाप्त होने
पर वह उसका त्याग कर देता है तथा नये फीटिश की खोज
करता है। फीटिशवाद में इसप्रकार "उपयोगितावाद" के लक्षण
दिखलायी पड़ते हैं।

फीटिशवाद में आत्मा की सत्ता स्वतन्त्र मानी गयी
है, किन्तु उसे स्वार्थसिद्धि का साधन बनाया गया है। अतः यह
धर्म का विकृत रूप है। फीटिश का प्रयोग धार्मिक होने

की अपेक्षा जादुई अधिक है। ~~इस~~ यह अवस्था अन्ध विश्वास एवं अश्रद्धा से पूर्ण है अतः धार्मिक विकास के बजाय यह अवस्था धार्मिक ह्रास का सूचक है।

———X———X———

मानावाद (Manaism)

मानावाद आदिम धर्म का एक रूप है जिसमें भौतिक शक्ति से भिन्न रहस्यमय प्राण-शक्ति को माना, औरेण्डा या वकण्डा कहा गया है। यह व्यक्तित्वहीन एवं अमानुषिक शक्ति है जो समस्त शुभ-अशुभ कर्मों का सम्पादन करती है। यह निराकार होकर भी किसी आकार को धारण कर सकती है। इसे आत्मा की संज्ञा नहीं दी जाती, बल्कि इसे संकल्प एवं शक्तियुक्त कहा गया है जिसमें मानवों की बात सुनने-समझने की क्षमता है।

डॉ० मरेट (Dr. Maret) ने 'माना' को व्यक्तित्व-रहित, अद्भुत एवं विलक्षण कहा है। यह शक्ति सभी पदार्थों में नहीं होकर कुछ निश्चित पदार्थों में ही मानी जाती है। कुछ विशेष मानवों, मृतात्माओं एवं वस्तुओं को मानायुक्त कहा गया है जिसको वश में रखना लाभप्रद है। ताबीज, जड़ी-बूटी, पत्थर या किसी धातु में मन्त्र के द्वारा माना को बाँधा जाता है। कोडरिंगटन (Codrington) ने कहा है कि यह भौतिक शक्ति से नितान्त भिन्न एक ऐसी शक्ति है जो सभी प्रकार के शुभ-अशुभ व्यापारों में सक्रिय रहती है और जिस पर अधिकार या नियन्त्रण होने से सर्वाधिक लाभ होता है। इसीप्रकार प्रो० ब्राइटमैन (Prof. Brightman) ने 'माना' के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह शक्ति या गति का पर्याय है जिसके आधार पर अद्भुत फलों को प्राप्त किया जा सकता है।

'माना' शक्ति को अतिप्राकृतिक, अशरीरी एवं व्यक्तित्वरहित कहा गया है जो विद्युत के समान किसी

भौतिक वस्तु में प्रवेश कर सकती है। इसका संक्रमण एक वस्तु से दूसरी वस्तु में भी हो सकता है। आदिम जनजातियों में ऐसी मान्यता है कि 'माना' शक्ति के कारण ही किसीप्रकार की प्रगति होती है। जैसे — यदि राजा युद्ध में विजयी होता है, तो इसका कारण मानायुक्त ताबीज का धारण करना है। पेड़-पौधे में यदि प्रचुर फल-फूल लगते हैं या व्यक्ति की भौतिक उन्नति होती है, तो इन सबका आधार 'माना' शक्ति को स्वीकार किया जाता है। इसीप्रकार कुछ विशिष्ट व्यक्तियों (जैसे — पादरी, राजा, चिकित्सक आदि) को मानाशक्ति से सम्पन्न कहा गया, तथा उन्हें आराधना के योग्य समझा गया। हट्टन के अनुसार हिन्दू समाज की जाति-व्यवस्था के मूल में जनजातियों का यह मानावाद ही है।

भारतीय जनजातियों में माना का उदाहरण छोटानागपुर की 'हो', 'मुण्डा' या अन्य जनजातियों में मिलता है। ये लोग उसे "बोंगा" कहते हैं। बोंगावाद के रूप में उनमें मानावाद प्रचलित है। ये लोग वनस्पति, पशु (जैसे — शेर, चीता, भालू आदि) या प्राकृतिक घटना (जैसे — वर्षा, तूफान, बाढ़, नदी का प्रवाह आदि) का कारण बोंगा को समझते हैं। यह रहस्यमय, अलौकिक एवं अशरीरी शक्ति है। मुण्डा जनजाति में सिंगबोंगा को 'सबसे बड़ा ईश्वर' तथा नागे बोंगा को 'नदियों की देवी' कहा गया है।

जेम्स का कहना है कि जीववाद ~~(सर्वात्म~~ (सर्वात्मवाद) में अनेक वर्षों का चिन्तन एवं ~~प्रत्ययात्मक~~ प्रत्ययात्मक विचार छिपे हुए रूप में दिखलायी पड़ता है। इसलिए मानावाद को ही आदिम धर्म का प्रारम्भिक विचार (या बीजावस्था) मानना चाहिए। डॉ० मरेट का कहना है कि जीववाद वास्तव में एक-प्रकार का प्रारम्भिक दर्शन है, न कि धर्म। उनके अनुसार आदिम जातियों में यह विश्वास था कि आत्मा के बिना कहीं कोई घटना या गति नहीं होती। इस-

प्रकार विविध घटनाओं की व्याख्या-रूप में जीववाद या सर्वात्मवाद की उत्पत्ति हुई।

किन्तु कुछ विचारकों के अनुसार जीववाद से पहले मानावाद को स्वीकार नहीं किया जा सकता। जैसे— टाइलर (Tylor), कार्स्टेन (Karsten) आदि। कार्स्टेन का कहना है कि माना एक व्यक्तित्वरहित शक्ति है जिसका अस्तित्व व्यक्तित्वपूर्ण आत्मा के बिना नहीं हो सकता। उनकी दूसरी युक्ति है कि माना-विचार में अमूर्त भाव अधिक प्रबल है, किन्तु मूर्त (साकार) के पहले अमूर्त (निराकार) अवस्था का पाया जाना, अमनोवैज्ञानिक है।

व्यक्तित्व से रहित 'माना' की रहस्यपूर्ण शक्ति से आश्चर्य का संचार होता है। माना की अभिव्यक्ति अनेक पदार्थों, घटनाओं एवं जीवों के द्वारा होती है तथा धार्मिक क्रिया-कलापों के द्वारा इसे रखा जाता है। किन्तु वास्तव में यह अवस्था अन्ध-विश्वास से युक्त एवं तर्क से रहित है। उदाहरण के लिए, युद्ध में राजा के विजयी होने का आधार उसका माना से युक्त ताबीज को धारण करना कहा गया है, किन्तु ऐसा मानना तर्क या कारणता सिद्धान्त पर आधारित नहीं है। माना-वाद को धर्म का अनिश्चित, विश्लेषण से रहित एवं ~~भेदरहित~~ भेदातीत अवस्था कहा जा सकता है।

जीववाद या सर्वात्मवाद में प्रकृति की प्रत्येक घटना या गति का कारण आत्मा को माना जाता है। पत्तों की सरसराहट हो या झरनों का कलकल प्रत्येक में आत्मा का वास है। टाइलर ने इसलिए जीववाद को ही आदिम धर्मों का मूलरूप माना है।

मानावाद में मूल रूप से अमूर्त तथा जीववाद में मूर्त विचारों की प्रधानता है। फिनेगन एवं अन्य विचारकों के अनुसार जीववाद एवं मानावाद के विचार इतने घुले-मिले हैं कि एक को दूसरे से पहले मानने का कोई ठोस आधार नहीं मिलता। वास्तव में आदिम धर्म में मानावाद एवं जीववाद एक साथ ही सम्मिलित रूप में पाये जाते हैं।

——X——X——

टोटेमवाद (Totemism)

टोटेमवाद आदिम धर्म का एक रूप है जिसमें आदिम जातियों का अपने पूर्वजों के साथ किसी प्रतीक के माध्यम से रहस्यमय सम्बन्ध माना जाता है। यह प्रतीक या टोटम किसी भी रूप में हो सकता है। जैसे — वनस्पति, पशु, वर्षा, नदी आदि। टोटम एवं टोटमी (टोटम को मानने वाले) के बीच एक प्रकार का आन्तरिक सम्बन्ध माना जाता है। इस सम्बन्ध में विश्वास के कारण ऐसा माना जाता है कि टोटम-पशु या वनस्पति उनकी रक्षा करेंगे तथा संकट-काल में उनकी प्रार्थनाएँ सुनेंगे। टोटम को जनजाति का मूल पुरुष माना जाता है जिसके आधार पर वंश-उत्पत्ति की खोज की जाती है। इसी रूप में जनजाति स्वयं को सूर्य, चन्द्र, किसी विशेष पशु या वृक्ष से उत्पन्न मानती है। टोटम पशु को मारना, जलाना या खाना वर्जित है। एक समान टोटम को मानने वाले समान रक्त सम्बन्धी माने जाते हैं जिससे उनके बीच वैवाहिक सम्बन्ध वर्जित है। जनजाति में अपने टोटम के प्रति विशेष आदर एवं सम्मान का भाव रहता है।

टोटमवाद यद्यपि बहुत प्राचीन माना जाता है, किन्तु इसे सर्वव्यापक (Universal) नहीं माना जा सकता। ब्राइटमैन (Brightman) ने कहा है — "Totemism ..... was not equally universal, but was very wide spread and socially important."

टोटम की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विचारकों के मत अलग-अलग हैं। टाइलर (Tylor) का मानना है कि किसी विशेष प्राणी या वनस्पति में आदिम मनुष्य का वास-स्थान है, इसी विश्वास से टोटम की उत्पत्ति हुई। रिजले (Rizle) के अनुसार किसी आकस्मिक सम्बन्ध के आधार पर इस प्रथा का प्रारम्भ हुआ जिससे अशुभ घटनाओं को रोका जा सके। जैसे — मोर को मारने के बाद अन्धा होने से मोर के प्रति आदर एवं भय के मिश्रित भाव से उसे टोटम मान लेना। इसी प्रकार 'हेडन' ने टोटम-उत्पत्ति की दूसरी

व्याख्या की है। उनके अनुसार टोटम की उत्पत्ति का आधार है — जीव, वनस्पति या फल-फूल संरक्षण। उनका मानना है कि किसी नवीन वनस्पति का पता चलने पर उसे छिपाने या सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया जाता था जिससे दूसरी जातियाँ उनका पता लगाकर शीघ्र समाप्त न कर दें।

टोटम-पशु या वनस्पति को अतिपवित्र माना जाता है। आदिम मनुष्य के मन में उसके प्रति अपार श्रद्धा रहती थी तथा उसमें रहस्यमय शक्ति के होने का विश्वास बना रहता था। टोटम-पशु की मृत्यु होने पर उसे गाड़ देते थे तथा परिवार के सदस्य की मृत्यु जैसा विलाप करते थे। इसीप्रकार टोटम-वनस्पति की शाखाओं को लेकर वे एक जगह एकत्र हो जाते थे, जहाँ उनके पूर्वज गाड़े गये होते थे। यद्यपि टोटम की पूजा नहीं की जाती थी तथा टोटम-वनस्पति को काटना-जलाना निषिद्ध था। इसीप्रकार टोटम-पशु का माँस खाना वर्जित था तथा उसे पीड़ा पहुँचाना या मारना निषिद्ध था। किन्तु वार्षिकोत्सव (विशेष अवसर) के अन्त में आदिम जातियों द्वारा टोटम-पशु की बलि दी जाती थी तथा उसके माँस का वितरण प्रसाद के रूप में किया जाता था। उनके अन्दर यह विश्वास बना रहता था कि बलि दिये गये पशु में रहस्यमय शक्ति है तथा वह देव-रूप धारण कर लेता है)

अनेक पशु या पक्षी को टोटम का रूप माना जाता है। जैसे — बाघ, भालू, सिंह, हाथी, कौआ, सर्प, बगुला आदि। आज भी अनेक व्यक्तियों के नाम के साथ पशु-पंक्षी के नाम जुड़े होते हैं। जैसे — सिंह, कर्कट आदि। 'थर्स्टन' ने दक्षिण भारत की जनजातियों में जिन टोटमों का उल्लेख किया है उसके अन्तर्गत प्रायः सभी वृक्ष या पशु आ जाते हैं। इन टोटमों के आधार पर इन जनजातियों के अनेक भेद हैं। मध्यप्रदेश की 'भील' जनजातियों का मुख्य टोटम है — साँप, बाघ, चीता, बाँस-वृक्ष आदि। इसीप्रकार छोटानागपुर की कुछ जनजातियों का टोटम 'बाँस-वृक्ष' है। संथाल जाति की 'अरबो' उपजाति का टोटम 'वृक्ष' है। इन टोटमों के आधार पर उराँव में 73 तथा संथालों में 93 उपजाति के भेद हैं।

टोटम-पशु या वनस्पति की पूजा नहीं की जाती भी, लेकिन कुछ लोगों ने इसे धार्मिक अवस्था न मानकर केवल सामाजिक व्यवस्था कहा है। प्रो० गैलवे (Prof. Galloway) ने कहा है — "Totemism is a social custom rather than a religion." किन्तु टोटमवाद में धर्म के कुछ लक्षण दिखलायी पड़ते हैं। फ्रायड का कहना है कि टोटम-पशु की बलि देना और उसे पवित्र मानना आदिम जातियों में अपने पूर्वजों के प्रति व्याप्त प्रेम एवं घृणा की भावना को व्यक्त करता है। उनके अनुसार टोटमवाद से अनेकेश्वरवाद (Polytheism) का प्रारम्भ होते हुए एकेश्वरवाद (Monotheism) का विकास दिखलायी पड़ता है। उनका मानना है कि पाप के प्रायश्चित की भावना तथा अन्तःशुद्धि का विचार जो यहूदी एवं ईसाई धर्मों में पाया जाता है, वह सम्भवतः टोटमवाद से ही विकसित हुआ है। राबर्टसन स्मिथ के अनुसार ईसाइयत की प्रभुभोज की रीति भी इसी टोटम-बलि पर आधारित है। टोटमवाद का रूप हिन्दू धर्म में भी स्पष्टतः पशु-पूजा में देखा जा सकता है। जैसे — गौ-पूजा, नाग-पूजा आदि। हिन्दू धर्म में टोटम-पशु की कल्पना देव-देवी के वाहन-रूप में भी की गयी है। जैसे - दुर्गा-देवी के सिंह, शिव के नाग, गणेश के चूहा आदि। इसके अतिरिक्त, अनेक देव की कल्पना भी पशु रूप में की गयी है। अन्ततः टोटम स्वयं देव-रूप में परिणत हो जाता है।

इन युक्तियों से स्पष्ट है कि टोटमवाद को समाज-व्यवस्था के साथ-साथ आदिम धर्म की भी संज्ञा अवश्य दी जा सकती है।

——X——X——